# जनाबे सकीना - ऐ शह की यतीमा

माँ छोटी सी मय्यत पा यह रो-रो के पुकारी- ऐ शह की यतीमा
परदेस में क्या तुम भी ख़फा हो गयीं वारी- ऐ शह की यतीमा

सब्र आ गया लिपटा के सरे शाहे ज़मन को- क्या इसलिए चुप हो
थी बाप की फुरक़त में सदा गिरिया ओ ज़ारी- ऐ शह की यतीमा

हैं ज़ख़्म जो कानों में दिखा दो वह पदर को- रुखसार दिखा दो
और पीठ पर दुर्रो के निशा माँ गयी वारी- ऐ शह की यतीमा

रोती थी शबो रोज़ पदर के लिए ऐ जाँ- मादर गयी क़ुरबां
क्या पाते ही सर ख़ुल्द गयी तेरी सवारी- ऐ शह की यतीमा

किस बात पर रूठी हो ज़रा आँख तो खोलो- कुछ मुँह से तो बोलो
सदक़े गयी माँ चाँद सी सूरत पर तुम्हारी- ऐ शह की यतीमा

कुम्हला गया किस वासते यह फूल सा चेहरा- क्या हाल है तेरा
क्या तू भी सुऐ बाग़े जिनां आज सिधारी- ऐ शह की यतीमा

ज़िन्दाने बला में है क़यामत का अंधेरा- माँ क्या करे दुखिया
गुरबत में है बे गोरो कफ़न लाश तुम्हारी- ऐ शह की यतीमा

ऐ फिक्र' था जिन्दाँ मे बपा शोरे क़यामत- थमती न थी रिक़्क़त
सब एहले हरम कहते थे ब गिरिया ओ ज़ारी- ऐ शह की यतीमा